भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्र के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 2 | अप्रैल 2001 | अंक 4

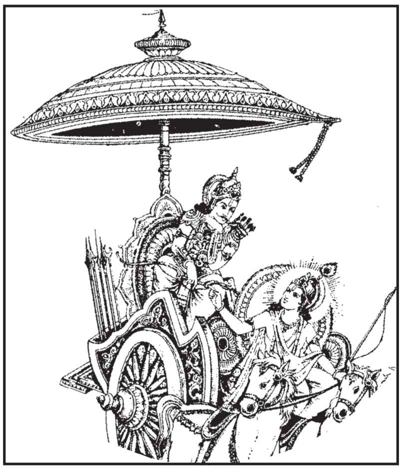

महाभारत
के ज्ञातव्य प्रसंग

वासुदेव श्रीकृष्ण पाण्डु-पुत्र युधिष्ठिर के फुफेरे भाई थे। उम्र में युधिष्ठिर श्रीकृष्ण से 42 दिन छोटे थे। युधिष्ठिर के दूसरे भाई भीम उनसे सात महीने छोटे। तीसरे भाई अर्जुन भीम से एक वर्ष तथा युधिष्ठिर से एक वर्ष सात महीने छोटे थे। धृतराष्ट्र-पुत्र दुर्योधन और पाण्डु-पुत्र भीम का जन्म एक ही दिन हुआ था। युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन तीनों भाई कुन्ती-पुत्र और नकुल और सहदेव पाण्डु की दूसरी पत्नी माद्री के पुत्र थे।

पाण्डवों के वनवास के समय युधिष्ठिर 80 वर्ष के थे। अर्जुन-पुत्र अभिमन्यु का उत्तरा के साथ विवाह महाभारत युद्ध शुरू होने से पाँच महीने पहले हुआ था। अभिमन्यु पुत्र परीक्षित का जन्म महाभारत-युद्धान्त के एक वर्ष नौ महीने बाद हुआ तथा उनका देहान्त 96 वर्ष की आयु में हुआ।

महाभारत-युद्ध की समाप्ति के 18 वर्ष बाद धृतराष्ट्र, गान्धारी, कुन्ती और विदुर जीवन से निराश होकर वन में चले गए और दो वर्ष बाद उन लोगों ने शरीर-त्याग किया। उसी वर्ष महाकवि वेदव्यास ने महाभारत की रचना प्रारम्भ की। इसके तेरह वर्ष बाद यादवों का नाश और श्रीकृष्ण का महाप्रयाण हुआ। इस घटना के दो साल बाद परीक्षित को राज्याभिषेक कर द्रौपदी सहित पाण्डव वन चले गए और एक वर्ष बाद उनका स्वर्गारोहण हुआ।

महाभारत का कालनिर्णय

प्रमुख तिथियाँ

क्र॰	घटना	कलि संवत्	शकपूर्व	ईसवी पूर्व	विशेष उल्लेख
1.	श्रीकृष्ण जन्म	1058 भाद्र कृ॰ 8, बुध रोहिणी	2122	2045 2669, 23 जून	ग्रह स्थिति प्रचलित कुण्डली से जूलिवर्ष लगभग पूरी मिलती है।
2.	युधिष्ठिर जन्म	आश्विन शुक्ल 5, 1058 सोमवार, 2 अगस्त ज्येष्ठा	2122	2045 2669 (जू॰वि॰) 2 अगस्त	पारम्परिक ज्येष्ठा नक्षत्र तथा सोमवार मिलता है तथा तिथि भी मिलती है। गुरु, कर्क
3.	भीम जन्म	1059, फाल्गुन शुक्ल 13 मघा (इसी दिन दुर्योधन का जन्म)	2121	2044	पारम्परिक सिंह राशि, गुरु, सिंह मघा, नक्षत्र, मध्याह्न (मैत्र मुहूर्त)
4.	अर्जुन का जन्म	1060 फाल्गुन शुक्ल, उत्तरा फाल्गुनी	2120	2043	पारम्परिक पूफा/उफा के बीच (कन्या गुरु) सिंह राशि
5.	युधिष्ठिर शकारम्भ	1066 (द्विक् पंच द्वियुतः)	2114	2037	इस वर्ष मेष के गुरु, यौवराज्याभिषेक?
		1081	2099	2022	
	(या फिर श॰पू॰ 2099 (2526-427 इन्द्रप्रस्थ में राज्याभिषेक) संभव लगता है)				
6.	पाण्डवों का वनवास (प्रस्थान)	1138 आषाढ़ कृष्ण 8	2042	1965 9 मई 2749 जू॰व॰	खाण्डवदाह का अनुमानित वर्ष कलि 1087
7.	पाण्डवों का गोहरण के समय प्रकट होना	1151 आषाढ़ कृ॰ 8	2029	1952 16 मई 2762 जू॰व॰	वनवास की कुल अवधि 4755 दिन 13 वर्ष अर्जुन के पास गाण्डीव के 65 वर्ष
8.	उत्तरा अभिमन्यु विवाह	1151 आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा	2029	1952	गोहरण के आठ दिन बाद विवाह नक्षत्र रोहिणी में।
9.	महाभारत युद्ध	1151 मार्गशीर्ष (ज्येष्ठा) वस्या (ज्येष्ठा)	2029	1952 17 अक्टू॰ जू॰व॰ 2762	लेख में विस्तृत चर्चा
		(अह॰ 420280)	2029	1952	लेख में विस्तृत चर्चा
10.	भीष्म निर्वाण	माघ शुक्ल 8 1151 रोहिणी	2029	24 दिस॰	महाभारत के वर्णन के अनुसार उत्तरायणारंभ
11.	युद्धान्त	पौष कृ॰ द्वितीया 1151, पुष्य	2029	1952	अठारह दिन में
12.	परीक्षित जन्म	चैत्र शुक्ल 1152	2028	1951	(अनुमानित) जन्म के समय पाण्डव हिमालय से धन लेकर लौटे थे तथा उन्हें एक मास हुआ था।
13.	धृतराष्ट्र गांधारी कुन्ती, विदुर का वन को प्रस्थान	1169	2011	1934	पन्द्रह वर्ष बाद निर्वेद/अठारहवें वर्ष पर छोड़ा।

शेष पृष्ठ 2 पर

पृष्ठ 1 का शेष

14.	(क) उक्त चारों की मृत्यु	1171	2009	1932	दो वर्ष बाद जंगल की आग से धृतराष्ट्र की मृत्यु के बाद।
	(ख) महाकवि वेदव्यास ने महाभारत की रचना प्रारम्भ की				
15.	यादवों का नाश तथा श्रीकृष्ण का महाप्रयाण	1184	1996	1919	श्रीकृष्ण ने 125 वर्ष की आयु प्राप्त की/126वें वर्ष में।
16.	द्रोपदी सहित पाण्डवों का वन प्रस्थान, परीक्षित का राज्याभिषेक	1186	1984	1917	छत्तीसवें वर्ष में
17.	द्रोपदी सहित पाण्डवों का स्वर्गारोहण	1187	1993	1916	श्रीकृष्ण निर्वाण के लगभग दो-ढाई वर्ष बाद।
18.	परीक्षित् की मृत्यु	1247	1933	1855	जनमेजय का राज्यारोहण, सर्प सत्र में वैशम्पायन का महाभारत सुनाना।

(**डॉ० मोहन गुप्त** के ग्रन्थ 'महाभारत का कालनिर्णय' से)

भाषा, साहित्य, संवाद, समाचार

अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस 21 फरवरी 2001 को मैं बंगलादेश में था। सुबह बांग्ला भाषा के लिए प्राण देने वाले छात्रों की स्मृति में बने शहीद मीनार गया, जहाँ हजारों की संख्या में बांग्ला देशवासी श्रद्धा निवेदन करने पहुँचे थे। यह स्थान ढाका के शैक्षणिक परिवेश के बीच है। बांग्लादेश विश्व का एकमात्र राष्ट्र है, जिसे भाषा की कोख से जन्मने का गौरव प्राप्त हुआ। 1952 में बांग्ला भाषा को राजभाषा बनाने की माँग को लेकर जो आन्दोलन शुरू हुआ उसकी परिणति 1972 में बांग्लादेश के स्वतंत्र देश बनने पर हुई। इस बीच वर्षों वहाँ मजहब और मातृजुबान के बीच दीर्घ संघर्ष चला। जाहिर है भाषा ने मजहब को शिकस्त दे दी। आज बांग्ला देश के तेरह करोड़ लोगों को अपनी भाषा पर गर्व है। यहाँ साम्प्रदायिक संकीर्णता के आधार पर कुछ राजनीतिक दल पनपे हैं किन्तु भाषा के प्रबल प्रभाव के कारण वह कभी सिर नहीं उठा सके। **—विश्वम्भर नेवर**

समाज विकास, कोलकाता से

❑ ❑ ❑

बांग्लादेश में बंगला भाषा, उसकी लिपि, उसकी संस्कृत शब्दावली, उसकी पृष्ठभूमि इस्लामी मान्यताओं के साथ चलने में बाधक नहीं बनती। इंडोनेशिया में किसी पुरुष का नाम सुकर्ण होना और किसी महिला का नाम मेघावती होना उनके मुसलमान होने में कोई अड़चन नहीं डालता। **—डॉ० महीप सिंह**

❑ ❑ ❑

पाकिस्तान के मुख्य भाग के नागरिक पंजाबी हैं। उनकी भाषा पंजाबी है, किन्तु पाकिस्तान में पंजाबी का प्रयोग वर्जित है, वहाँ स्कूलों में उर्दू भाषा को ही मान्यता प्राप्त है। उनका मानना है कि गुरुमुख और पंजाबी सिक्ख धर्म की भाषा है। पाकिस्तान में इस्लाम के अलावा अन्य किस धर्म और संस्कृति को मान्यता नहीं है, परिणाम है अमानुषी कट्टरता जिसने पाकिस्तान के विकास को अवरूद्ध कर नकारात्मकता की ओर अग्रसर कर रखा है। **—सम्पादक**

समस्त भारतीय भाषाओं की लिपि देवनागरी

हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्थापित करने हेतु सुझाव देते हुए तमिलनाडु हिन्दी अकादमी अध्यक्ष **डॉ० बाल शौरी रेड्डी** ने कहा—''थोड़ी उदारता एवं त्याग के साथ भारत की समस्त भाषाओं की लिपि देवनागरी हो। इससे दैनिक व्यवहार में सुगमता के साथ-साथ मुद्रण, लेखन, टेलीप्रिंटर आदि में भी बचत होगी। त्रिभाषा सिद्धान्त को पूर्णरूप से लागू किया जाय। देश के सभी विश्वविद्यालयों में हिन्दी के माध्यम से अध्ययन-अध्यापन का कार्य प्रारम्भ किया जाय। प्रादेशिक भाषाओं के समानार्थी शब्दों को हिन्दी के शब्द-भण्डार में जोड़ा जाय तथा प्रान्तीय भाषाओं के ऐसे शब्दों को आत्मसात किया जाय जो शब्द हिन्दी में नहीं है।''

हिन्दी क्षेत्र सांस्कृतिक पतन में गिर गया है

35-40 करोड़ की भाषा हिंदी की तुलना यदि विश्व की छोटी-छोटी भाषाओं—जैसे दो करोड़ लोगों की भाषा हंगेरियन से की जाए तो आँखे खुली रह जाएंगी। दो करोड़ की भाषा जितनी सम्पन्न है, 40 करोड़ की भाषा उतनी ही विपन्न लोक संस्कृत का जो हाल है, वह किसी से छिपा नहीं है। शिक्षा किस हद तक गिर गयी है, वह भी सब जानते हैं। क्या बात है कि 'साइबर सिटी' काशी या इलाहाबाद में नहीं, हैदराबाद और बेंगलूर में है ? क्या कारण है कि केरल में 100 प्रतिशत साक्षरता है और उत्तर प्रदेश में 35-40 प्रतिशत ? यह भी सच है कि हिन्दी क्षेत्र जितना असहिष्णु ही नहीं, हिंसक है वैसा भारत का कोई दूसरा क्षेत्र नहीं। यह प्रमाण है कि हमारे हिन्दी समाज में तर्कसंगत लोगों की संख्या बहुत कम है। जब विरोधियों पर गुस्सा आये और हिंसा से उन्हें कुचल देने की बात की जाए तो समझ लीजिए सांस्कृतिक पतन की स्थिति है। **—असगर वजाहत**

मत-सम्मत

विश्वविद्यालय प्रकाशन की मुख पत्रिका होने पर भी 'भारतीय वाङ्मय' साहित्य जगत की गतिविधियों पर अच्छा प्रकाश डाल रहे हैं। वास्तव में यह हिन्दी तथा हिन्दीतर भाषी क्षेत्र के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका है। **—डॉ० एन० सुन्दरम,** चेन्नई

■ ■ ■

विश्वविद्यालय प्रकाशन ने अनेक सुन्दर और पठनीय ग्रंथों का प्रकाशन किया है। आपकी पुस्तकों का मैं बहुत पुराना पाठक हूँ। किन्तु नए प्रकाशनों का पता नहीं चल पाता था। 'भारतीय वाङ्मय' से यह कमी पूरी होगी। इसके अलावा साहित्य जगत की हलचल की जानकारी भी मिलती रहेगी। सामग्री का चयन सुन्दर है, पठनीय भी है। **—जयप्रकाश भारती,** संपादक, नंदन

■ ■ ■

'भारतीय वाङ्मय' का फरवरी अंक मिला। बहिरंग और अन्तरंग दोनों बहुत सुन्दर है। अंक में कोई बड़े लेख नहीं हैं, लेकिन पुस्तकों के परिचय के माध्यम से बहुत कुछ कहे गये हैं। महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू तथा अन्य विश्व प्रसिद्ध व्यक्तियों के विचार बहुत कुछ कह जाते हैं।

—विष्णु प्रभाकर, दिल्ली

■ ■ ■

हिन्दी भाषी व्यक्ति के लिए साहित्यिक एवं सांस्कृतिक जानकारी एवं नवीन साहित्य प्रकाशन की जानकारी के लिये यह मासिक पत्रिका एक अत्यन्त उपयोगी दर्शन है। सभी साहित्यकार, लेखक, कवि आलोचक एक साथ इतनी नवीन वाङ्मय पाकर अवश्य लाभान्वित होंगे।

—जे०एल० त्रिपाठी 'नीरस', रामपुर नैकिन

■ ■ ■

आपकी पत्रिका जनोपयोगी सामग्री प्रकाशित कर अच्छा कार्य कर रही है। समय-समय पर आपकी पत्रिका राजभाषा से जुड़े मुद्दों पर सारगर्भित सामग्री प्रकाशित करती आ रही है। इससे जहाँ राजभाषा के क्षेत्र में कार्य करने वालों को प्रेरणा मिलेगी वहीं दैनिक काम-काज में भी इसकी भूमिका सराही जाएगी। **—डॉ० दिनेश चमोला**

सम्पादक-'विकल्प'

■ ■ ■

'भारतीय वाङ्मय' सीमित पृष्ठों में व्यापक विवरण अर्थात् गागर में सागर हिन्दी के शोधार्थियों और जिज्ञासुओं के लिए यह पत्रिका निस्संदेह महत्त्वपूर्ण है।

—डॉ० लक्ष्मीकान्त पाण्डेय, कानपुर

■ ■ ■

'भारतीय वाङ्मय' के दोनों अंक एक साथ पढ़ गया, बहुत कम स्थान में काफी जानकारी मिल गयी। विश्वविद्यालय प्रकाशन हिन्दी में गम्भीर और स्थायी मूल्य के ग्रंथ प्रकाशित करने में अग्रणी है। आप पुस्तक प्रकाशन को व्यवसाय न मानकर साधना मानते हैं। यही बनारस की विशेषता है।

—डॉ० बुद्धिनाथ मिश्र, मुख्य प्रबंधक, राजभाषा आयल एंड नेचुरल कारपोरेशन लि०, देहरादून

चेन्नई से **डॉ० एन० सुन्दरम्** ने अपने पत्र में स्व० डॉ० रामसिंह तोमर के बारे में लिखा है—

तोमरजी गम्भीर विद्वान तो थे ही। वे बहुत बड़े दूरदर्शी थे। शांति निकेतन में हिन्दी का भवन पुनर्नवीकरण कर हिन्दी की अमित सेवा की है। आल्वार साहित्य के उपरान्त उन्होंने तमिल प्रदेश के शैव साहित्य के रूपान्तर पर ध्यान दिया। तमिल-हिन्दी के प्रबुद्ध विद्वान् डॉ० सुन्दरम को शांति निकेतन बुलाकर शैव साहित्य का अनुवाद कराया। स्वयं उनके निरीक्षण में यह काम सम्पन्न हुआ। तमिल शैव साहित्य को 'तिरुमुरै' कहते हैं। उन्होंने आठवाँ तिरुमुरै 'तिरुवाचकम' हल्वासिया ट्रस्ट की सहायता से विश्वभारती प्रकाशन के रूप में प्रकाशित किया। इस रूप में डॉ० तोमर ने हिन्दी की महती सेवा की है। चेन्नै में उनका सम्मान हुआ। तमिल साहित्य का परिचय कराने में उनकी सेवा अविस्मरणीय है। हिन्दी जगत उनकी सेवा से भले ही अनभिज्ञ रहे तमिल भाषी उनकी सेवा से अधिक प्रभावित हैं। सम्पूर्ण शैव साहित्य का अनुवाद हो चुका है। शेष त्रिरुमुरै प्रकाशनाधीन है।

❑ ❑ ❑

चेन्नई से **डॉ० एन० सुन्दरम्** ने अपने पत्र में डॉ० बच्चन सिंह के ग्रन्थ 'हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास' के सन्दर्भ में लिखा है—

बच्चन सिंह गम्भीर विद्वान हैं। हिन्दी साहित्य के प्रख्यात समीक्षक और इतिहास लेखक हैं। 'हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास' से सभी साहित्यिक प्रेमी परिचित हैं। उसे आद्यान्त पढ़ने का अवसर मुझे मिला। उसमें दो तीन बातें मुझे खटकती है।

1. हिन्दी के उद्भव और विकास पर उनकी मान्यताएँ स्वीकार्य नहीं है। रामविलास शर्माजी के विचारों से अधिक प्रभावित हैं। डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, डॉ० उदयनारायण तिवारी की स्वीकृत मान्यताओं पर उन्होंने ध्यान नहीं दिया है। हिन्दी की बोलियाँ क्या स्वतंत्र अस्तित्व रखती हैं? अगर यह सच है हिन्दी की वर्तमान हैसियत क्या है? चालीस करोड़ लोगों की भाषा के रूप वह स्वीकृत हो चुकी है। बोलियों की अपनी अस्मिता है। पर हिन्दी का अपना वर्चस्व है। इन बिन्दुओं पर डॉ० बच्चन सिंह ने गम्भीर रूप से विचार नहीं किया है।

2. राम भक्ति शाखा पर विचार करते हुए उन्होंने लिखा है कि राम साहित्य के सभी उन्नायक ब्राह्मण थे। इसलिए राम साहित्य पर ब्राह्मणत्व का प्रभाव है। यह सरासर गलत है। साहित्य इतिहास में ब्राह्मण, अब्राह्मण का प्रश्न ही नहीं उठता। कृतित्व पर हमें ध्यान देना चाहिए। जातिवाद के लिए साहित्य इतिहास में चर्चा करना समीचीन नहीं है।

डॉ० बच्चन सिंह का प्रत्युत्तर है—

प्रिय मोदीजी,

डॉ० सुन्दरम् के पत्र की प्रतिलिपि पाकर प्रसन्नता हुई। उन्हें डॉ० (स्व०) तोमरजी के माध्यम से भलीभाँति जानता हूँ। वे तमिल और हिन्दी साहित्य के विद्वान हैं। उनकी गहरी अकादमीय रुचि का प्रमाण स्वयं उनका पत्र है। उन्होंने 'हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास' आद्यन्त मनोयोगपूर्वक पढ़ा है और दो अकादमीय आपत्तियाँ उठाई हैं। इसके लिए आभारी हूँ।

उनकी पहली आपत्ति हिन्दी की उत्पत्ति और विकास के सम्बन्ध में है। उनका कहना ठीक है कि मैं रामविलास शर्मा से प्रभावित हूँ। शर्माजी स्वयं आचार्य किशोरीदास वाजपेयी से प्रभावित हैं। वाजपेयीजी पहले व्यक्ति हैं जो संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश की नसेनी को नहीं मानते। इस भाशा से उस भाषा का निकलना आनुमानिक है। धीरेन्द्र वर्मा और तिवारी के तर्क भाषिकी की कसौटी पर खरे नहीं उतरते। इस सिलसिले में किशोरीदास वाजपेयी का 'शब्दानुशासन' द्रष्टव्य है। बोलियों के अस्तित्व की स्वायत्तता आपेक्षिक है। खड़ी बोली के विकास में अवधी, ब्रजी, बघेली, भोजपुरी आदि का महत्त्वपूर्ण योगदान है। खड़ी बोली ने संस्कृत से प्रभूत शब्दावली ग्रहण की है। काव्य विधाओं के लिए ब्रजी, अवधी, खड़ी बोली अपभ्रंश की ऋणी हैं।

दूसरी आपत्ति रामभक्ति काव्य (जिसे वे राम भक्ति शाखा लिखते हैं) के सम्बन्ध में है। दूसरा इतिहास को अच्छी तरह देखा तो पाया है कि राम साहित्य के सभी उन्नायक ब्राह्मण थे, मैंने कहीं नहीं लिखा है। यदि सुन्दरम् बतायेंगे तो आभारी हूँगा। रामभक्ति पर ब्राह्मणत्व का प्रभाव है। यह तुलसीदास के 'रामचरितमानस' से स्वत: प्रमाणित है। तुलसीदास पर लिखने वालों ने इसे गोल कर दिया है। यह दूसरी बात है। **—बच्चन सिंह**

महावीर त्यागी को मरणोपरान्त हिन्दी अकादमी सम्मान

हिन्दी के वरिष्ठ साहित्यकार **महावीर त्यागी** को मरणोपरान्त हिन्दी अकादमी का वर्ष 1999-2000 का विशिष्ट कृति सम्मान प्रदान किया जायेगा। उन्हें यह सम्मान उनके संस्मरण 'आजादी का आन्दोलन', 'हँसते हुए आँसू' के लिए दिया गया है।

सम्मानित की जानेवाली साहित्यिक कृतियों में प्रोफेसर रामशरण जोशी की 'मीडिया विमर्श' (पत्रकारिता), श्रीमती चित्रा मुद्गल का 'आवाँ' (उपन्यास), डॉक्टर मक्खनलाल शर्मा का 'अल्लादी क्यों मारा गया' (उपन्यास), भगवान सिंह का 'उन्माद' (उपन्यास), भगवानदास मोरवाला का 'काला पहाड़' (उपन्यास), रूप सिंह चन्देल का 'आखिरी खत' (कहानी संग्रह), डॉक्टर रमेशचन्द्र मिश्र की 'कबीर अकेला' (समीक्षा), देवेन्द्रराज अंकुर की 'पहला रंग' (समीक्षा), डॉक्टर राज बुद्धिराजा का 'हाशिये पर' (संस्मरण) तथा गौहर रजा का 'जज्बों की लौ तेज करो' (काव्य संग्रह) शामिल हैं।

बाल साहित्य कृति पुरस्कार योजना के अन्तर्गत पद्मश्री चिरंजीत का 'धरती का लाल', बलवीर त्यागी का 'खेल-खेल में भूगोल', चित्रा गर्ग का 'विश्व की महान वैज्ञानिक महिलाएँ', वन्दना जोशी का 'उत्तराखण्ड की लोककथाएँ' तथा डॉक्टर बी०आर० धर्मेन्द्र त्यागी के 'उत्तराधिकार' को सम्मानित किया जायेगा।

विशिष्ट कृति सम्मान के लिए 21 हजार रुपये नकद, शाल और एक प्रशस्ति पत्र दिया जाता है। साहित्यिक कृति सम्मान तथा बाल साहित्य कृति सम्मान के अन्तर्गत क्रमश: 11,000 रुपये तथा 5,100 रुपये नकद, शाल तथा प्रशस्तिपत्र प्रदान किये जायेंगे।

नई पुस्तकें

उपन्यास

शेष कादम्बरी — *अलका सरावगी* — 150
शादी से पेशतर — *शर्मिला बोहरा* — 125
तिरोहित — *गीतांजलि श्री* — 150

कहानी

चाकू, आइने और भूलभुलैया — *खोर्खे लुई बोर्खेज* — 195
तमाशा तथा अन्य कहानियाँ — *मंजूर एहतेशाम* — 150
सीता से शुरू — *नवनीता देवसेन* — 150
कहाँ से कहाँ — *सतीश जायसवाल* — 125

निबन्ध

आदि, अन्त और आरम्भ — *निर्मल वर्मा* — 195
कुशल प्रबन्धन के सूत्र — *सुरेश कान्त* — 175

संस्मरण तथा जीवन चरित

एक नाव के यात्री — *विश्वनाथप्रसाद तिवारी* — 160
क्रांतिकारी महामानव गुरूनानक देव — *जसबीर सिंह* — 250
अटलजी के पचहत्तर पड़ाव — *चन्द्रिकाप्रसाद रमण* — 150

समाजशास्त्र : राजनीतिशास्त्र

सदी के मोड़ पर — *अजित जोगी* — 295
आधुनिक भारत में जाति — *एम०एन० श्रीनिवास* — 175

कविता

कविता से लम्बी कविता — *विनोदकुमार शुक्ल* — 125
अपूर्ण और अन्य कविताएँ — *के० सच्चिदानन्द* — 125

योगग्रन्थ

योगवाशिष्ठ (1-2) — *डॉ० सुधाकर मालवीय* — 500

मानस

श्रीरामचरितमानस — *पं० जटाशंकर दीक्षित* — 400

इतिहास राजनीति

अटलजी के नाम एक धारावाहिक पत्र — *श्रवणकुमार गोस्वामी* — 180
कारगिल कश्मीर और पाकिस्तान — *ललित वत्स* — 125

समाजशास्त्र-अर्थशास्त्र

गरीब महिलाएँ, उधार एवं रोज़गार — *इन्दिरा मिश्रा* — 125
पंचायत राज एवं ग्रामीण विकास — *श्रीनाथ शर्मा* — 325
लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण और ग्रामीण विकास — *वी०पी० गौर* — 250

साहित्य

भारतीय स्वतंत्रता और हिन्दी उपन्यास — *शशिभूषण सिंहल* — 200

पर्यटन

मध्यप्रदेश के पर्यटन — *सुमन्त सिंह* — 375

खेतड़ी नरेश तथा स्वामी विवेकानंद

डॉ० राजेन्द्रमोहन भटनागर

खेतड़ी नरेश के व्यक्तिगत सचिव मुंशी जगमोहनलाल का मद्रास पहुँचना, रामकृष्ण परमहंस का साक्षात् दर्शन देना और शिष्यों को चंदा एकत्र करने में सफलता मिलना ऐसे शुभ लक्षण थे जिनसे स्वामी विवेकानन्द को यह स्पष्ट होने लगा कि माँ का आशीर्वाद उनके साथ है। वह उनकी नहीं, माँ की इच्छा है। तभी साक्षात् रामकृष्ण विशाल महासागर के इस तट पर खड़े होकर पुकार रहे थे—नरेन......ओ नरेन, ले मैं आ गया। अब उठ चल, तुझे उस पार जाना है।...... और वह समुद्र में अवतरण कर नंगे पाँव पैदल चल पड़े दूसरे किनारे पर पहुँचने के लिए।

मुंशी जगमोहन लाल उनसे अनुनय विनय कर रहे थे। वह कह रहे थे, ''आपकी कृपा से राजा साहब को पुत्रदर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। इस हेतु एक भव्य आयोजन रखा गया है। राजा की उत्कट इच्छा है कि इस पावन उत्सव में आप अवश्य सम्मिलित होकर आशीर्वाद दें।......''

पर वे कैसे जाएँ! एक माह से तो वे अमेरिका जाने की तैयारी में जुटे थे। जगमोहन लाल ने सारी स्थिति का जायजा लेकर कहा, ''यह तो और भी शुभ समाचार है। राजा ही सारी व्यवस्था कर देंगे। आपके नहीं पहुँचने से उनका चित्त उदास हो जाएगा।''

वे मन ही मन मुस्करा उठे। प्रभु की इच्छा सर्वोपरि मानकर वे मुंशी जी के साथ चल दिये।

खेतड़ी पहुँचे तब उत्सव रंग पर था। स्वयं राजा उत्सव स्थल पर उनकी अगवानी करने के लिए सभासदों के साथ उपस्थित थे। राजा ने उन्हें साष्टांग प्रणाम कर प्रणामी रूप में कलदार पच्चीस रुपये भेंट किये।

नन्हा राजकुमार जयसिंह का जन्मोत्सव बड़ी धूमधाम से पन्नालाल के तालाब पर आयोजित हो रहा था। उसमें राजाजी जयपुर, सीकर के राजा साहब आदि हजारों की संख्या में गणमान्य अतिथिगण पधारे थे। सबने स्वामीजी का अभिवादन-अभिनंदन किया था। उनकी अमेरिका यात्रा के उद्देश्य की सबने भूरि-भूरि प्रशंसा की थी।

कई दिन हो गए थे स्वामी विवेकानंद को वहाँ ठहरे हुए। उन्हें अपने अभियान पर भी निकलना था। उसका समय निकट आ गया था अत: उन्होंने निर्णय ले लिया कि तीसरे दिन वह खेतड़ी से प्रस्थान कर देंगे।

रात का प्रथम पहर झिलमिला रहा था। पवन मलयजी होकर नर्तन कर रहा था। नीलांबर से चंद्र की रश्मियाँ अमृत लुटा रही थीं। स्वामी विवेकानंद प्रकृति के इस मोहक रूप का अभिवादन कर रहे थे। लिखा पढ़ पा रहे थे तभी दरवाजे पर दस्तक हुई। वह बाहर आए। वहाँ कोई नहीं था। वह मुस्करा उठे।

जगमोहन लाल था जो दरवाजा खटखटाकर पीछे हट गया था। यथार्थत: वह साहस नहीं जुटा पा रहा था। कैसे जुटाता। कहाँ वह गणिका और कहाँ स्वामीजी!

खेतड़ी नरेश अजीत सिंह ने मालविका के नृत्य-संगीत का बहुत नाम सुना था। वह दूर-दूर तक प्रसिद्धि पा चुकी थी। नरेश का आग्रह था कि उसे ही इस अवसर पर बुलवाया जाए।

मुंशी जगमोहन लाल ने मालविका को आदेश दिया। वह मुस्करायी और नट गयी। वह कहने लगी, ''हमने नाच गाना छोड़ दिया है, मुंशी जी।''

''नरेश की आज्ञा का अर्थ समझती है, नर्तकी।'' जगमोहन लाल की आवाज कड़कदार थी।

''मैंने एक ही अर्थ जाना है, मुंशीजी, और वह है जीवन का अर्थ मृत्यु।''

''यह क्या बेसिर पैर की बात करती है, मालविका।''

''यही सच है, मुंशी। मृत्यु भेद भाव नहीं रखती। न वह ऊँच-नीच, गरीब-अमीर, राजा रंक आदि में भेद करती है। तेरा नरेश चाहे तो मुझे मौत दे सकता।'' मालविका ने सहज भाव से कहा और नव राजकुमार के मंगलमय भविष्य के लिए शुभकामनाएँ कीं।

''पगली मत बन। अक्ल से काम ले। मंगल कार्य में विघ्न मत बन। अरे, राजकुमार के जन्मोत्सव में तो मद्रास से स्वामी विवेकानंद भी आए हैं।''

''क्या कहा, स्वामी विवेकानंद!''

उसने कुछ रुककर और गहरी साँस लेकर उसकी ओर देखा और पूछा, ''वही विवेकानंद जो पहले खेतड़ी नरेश के यहाँ निवास कर चुके हैं और जिनकी ज्ञानगंगा की चारों ओर चर्चा हुई थी।''

''हाँ, वही स्वामी विवेकानंद।''

''वह भी वहाँ होंगे।''

''कदाचित्।''

''कदाचित् क्यों मुंशी?''

''वे संन्यासी हैं।''

''तो?''

''तू गणिका है, मालविका।''

''वह संन्यासी हैं, मुंशी। उनके लिए क्या गणिका, क्या भक्तिनी, क्या रानी, क्या राजकुमारी...... सब समान हैं। वहाँ भेद नहीं चलता। वहाँ ईश्वर का अखण्ड राज्य है।''

''वह तू जान।''

''वे तो सबके मन को जानते हैं न, मुंशी।''

''विवाद नहीं।''

''सुना है उन्होंने अपने भक्तों की जिज्ञासा के उत्तर में कहा था—संन्यासी मनुष्य के चिकित्सक होते हैं। इसी से दवा देने के पहले रोग की पहचान कर लेते हैं।''

''तू क्या चाहती है?''

''स्वामीजी वहाँ उपस्थित रहें।''

''यह हमारे वश में नहीं है।''

''नरेश के तो है, मुंशी।''

''नहीं।''

''वह तो नरेश हैं।''

''वह नरेश के गुरुदेव हैं।''

मालविका सोचती रह गई। उसके मन में स्वामीजी के दर्शन उत्कट लालसा थी। उसने ईश्वर को नहीं देखा और न वह कभी देख सकती है। परन्तु ईश्वर के नजदीक पहुँचे स्वामी के तो वह दर्शन कर ही सकती है। वह मधुर स्वर में बोली, ''एक वादा कर सकते हो, मुंशी।''

''कैसा वादा?''

''उनसे जाकर इस दासी का निवेदन कर सकोगे, मुंशी?'' मालविका के स्वर में करुणा थी।

''क्या?''

''गणिका अहिल्या का भाग्य चुराना चाहती है।''

''क्या मतलब?''

''मतलब वह स्वयं जान जाएँगे।''

''ठीक है।''

''तो मैं आऊँगी, मुंशी और ऐसा नृत्य-गीत का आयोजन होगा कि सब देखते रह जाएँगे।...... तेरे स्वामी की भी साज-संगीत में गहरी रुचि है न।''

''मुझे चलना होगा।''

वह मुस्करायी। मुंशी चल पड़ा।

अब मुंशी जगमोहन लाल के गले में वादे की वही हड्डी अटक रही थी। उन्होंने नरेश के आग्रह को यह कह कर टाल दिया था—संन्यासी के लिए नारी कंठ से संगीत सुनना उचित नहीं है।...... अब वह पुन: उनसे क्या कहे और कैसे कहे? इसी सोच-विचार में वह दरवाजे पर दस्तक देकर दूर हट गये।

स्वामी विवेकानंद को एहसास हुआ कि हो न हो, बाहर कोई अवश्य है। वह उठे। बाहर आये। कुछ आगे बढ़े और तेज आवाज़ में कहा, ''कौन है?''

मुंशी जगमोहन लाल के मुँह से निकल गया, ''मैं, ...स्वामीजी,...... मुंशी।''

''तो छिपे-छिपे क्यों हो, सामने आओ।''

वह सामने आ गया। नतसिर खड़ा हो गया। उसका मुँह लटका हुआ था। वह गहरे सोच में था।

''क्या बात है, मुंशी?''

मुंशी क्या कहे? वह क्या कह सकने की बात है! क्या वह गणिका को दिए वादे से मुकर जाये?

''क्या राजा ने पुन: आग्रह किया है, मुंशी?''

''नहीं स्वामीजी।''

''तब?''

''नर्तकी ने।''

''क्या चाहा है नर्तकी ने मुंशी?''

''आप पधारें।''

''उसे समझा देते, मुंशी।''

''कैसे समझाऊँ, स्वामीजी?''

''हम नारी कंठ से संगीत नहीं सुन सकते।''

''लेकिन वह पुरुष कंठ से...।''

''क्या कहा संगीत सुन लेगी। अवश्य, मुंशी, अवश्य। जानते हो क्यों? क्योंकि वह गणिका है।... नहीं, हम नहीं आ सकेंगे। जाकर उसे हमारे उत्तर से परिचित करा दो, मुंशी।''

''वह हठ किये है।''

''उसका मेरे पास कोई उपाय नहीं है।''

''वह कहती है कि आपने कहा है कि संन्यासी चिकित्सक होता है।''

स्वामी विवेकानंद सोच में पड़ गये। उन्होंने कहा था। वह प्रश्नकर्ता के प्रश्न को जान लेते थे जैसे चिकित्सक मरीज को देखकर उसके रोग का अन्दाज़ लगा लेता है। यह संवाद मद्रास का था और उस गणिका तक जा पहुँचा। उन्होंने सिर झटक कहा, ''जाओ, मुंशी। जाकर उसे हमारी बात समझा दो।''

मुंशी जगमोहन लाल उलटे पाँव लौट पड़ा। वह चुपचाप गणिका के पास आया। गणिका उसके लटके हुए मुँह को देखकर जान गयी कि स्वामी के गले नारी की प्रार्थना नहीं उतरी। गणिका मुस्करा उठी। उसकी नथ तुनक उठी, उसकी बड़ी-बड़ी चंचल आँखों में चपला कौंध उठी। उसकी सुराहीदार गरदन इठला उठी। उसने बहुत मद्धिम आवाज़ में कहा, ''मुंशी, आज तुम एक गणिका की आवाज का जादू भी देखना। माना कि वे संन्यासी हैं, सारे जगत के सिरमौर हैं लेकिन हम भी कला-संगीत के पुजारी हैं।... जाओ मुंशी, अपनी जगह जाकर बैठो और दीवानगी का असर देखो।''

सबकी निगाहें मालविका की छरहरी सुनहरी देह और चिक्वन माँसलता पर फिसल रही थीं। उसके अधखुले गुलाब से पतले और रक्ताभ होंठ, बैठने की तिर्यक मुद्रा और पतली कमर का अन्दाज़ जादुई असर पैदा कर रहा था। सारे वातावरण में सौन्दर्यश्री की मादकता मस्त हो झूम उठी थी।

मालविका अपने से प्रश्न कर रही थी—तूने कैसी कैसी उद्दण्ड महफिल को अपनी ऊँगलियों पर नचाया है। कितने साधु चरित्र को डगमगाया है। आखिर तू भी कुछ है। गणिका हुई तो क्या हुआ! क्या उसने गणिका बनना चाहा था? किसने बनाया उसे गणिका? कौन नचा रहे उसको गणिका बनाकर? क्या वह उनके समाज का अंग नहीं है? क्या उसके मन में घर बसा कर जीने की इच्छा नहीं है? किसने छीना है उससे जीने का अधिकार?... क्या संन्यासी का कर्त्तव्य नहीं है कि उसकी अस्मिता के सम्मान को बहाल करवाये? अपने से लड़ते हुए हार कर अपनी गणिका दादी को उसने प्रणाम कर उससे निवेदन किया—तूने कहा था न कि गणिका गंगा-सी पवित्र है और अमृत धुली है। कला का अपमान नहीं, सम्मान होना चाहिए। जो कला का अपमान करते हैं, वे ईश्वर का अपमान करते हैं।... कहा था ना... तूने वह भी कहा था, दादी कि कभी तू अपनी कला की परीक्षा सच्चे मन से लेकर देखना तो तू पाएगी कि तेरी कला की जीत होगी।... दादी, आज कला की परीक्षा का दिन है।... तू मुझे आशीर्वाद दे, दादी।

''गाना शुरू किया जाए।'' हुक्म हुआ।

आज वह अपनी आत्मा का गीत गायेगी! सारी महफिल सुनेगी उसकी अमृतमयी आवाज! संन्यासी भी सुनेगा कि गरल पीने वाली जिंदगी का जब दर्द पिघलता है, तो वह कैसी उथल-पुथल मचाता है।

उसने उस्ताद की ओर संकेत किया। वाद्य झूमने लगे। मिर्जा ने सारंगी सँभाली। पाण्डेय ने तबले पर थाप दी। हारमोनियम पर स्वर लहरियाँ मचल उठीं। रस निसृत होने लगा।

मालविका ने आँखें बन्द कर लीं और मन ही मन गुनगुनाने लगी। उसके अरुणोष्ठ मौन थे परन्तु उसकी गरदन थिरकने का उपक्रम करती प्रतीत हो रही थी। वह मन की गहराइयों में उतरती चली गयी। उसकी आत्मा तड़प उठी। जब अंदर से गहरी आकुलता एकाग्र होने लगती है, तब प्राण तत्त्व में स्पंदन हो उठता है। जीवन-जगत् एकात्म होता है और राग-लय में संगम हो उठता है। तब व्यक्ति अपने में नहीं होता। साकार-निराकार का यह अद्‌भुत समन्वय होता है। न साकार अनुभूति देता है और न निराकार का आभास होता है। सम-विषम का यही सम्मिलन रस-दृष्टि के नाद सौन्दर्य की प्रतीति कराता है। अननुज्ञात की यही स्थिति चरमोन्मुखी बनती जाती है। उसके हृदय में बाँसुरी के मंत्र खुलने लगे।

सबने देखा कि मालविका गीत उठाने से पूर्व झूमने लगी। वह आत्म विस्मृत होती जा रही है। वह आत्म-संवाद में थी। कह रही थी—ओ कण कण के अन्तर्वासी, तूने कैसे जाना कि तेरी मालविका का हृदय उद्वेलित हो उठेगा! मुझे तेरा ही अवलंब सँभालेगा। कैसी की होगी तूने मन-आत्मा के अन्तर्लाप की संकल्पना!

मालविका ने उस्ताद की ओर इशारा करके आलाप भरना शुरू किया। उसकी अत्यंत कोमल, मधुर और बारीक ध्वनि सीधे हृदय को छेड़ने लगी। पल भर में सारा वातावरण नीरव हो गया—मात्र वह अमृत ध्वनि अनुगूँजती रह गयी।

वह तल्लीन होकर गा उठी।

हमारे प्रभु औगुन चित न धरो।

कई तरह से, उतार चढ़ाव के साथ वह इसी चरण को लीन हुई उठाती-गाती रही। कंठ में कोयल थी, अधरों पर अमिय स्पंदन और नयनों में अनन्त आनंद। पहले ही चरण ने सबके मन को बाँध लिया था।

उसका स्वर मलयानिल के साथ उस स्तब्ध परिवेश में दूर-दूर तक महक उठा था।

स्वर मर्मज्ञ विवेकानंद के पाँव थिरक उठे। अन्तर्नाद! अनन्त करुणा स्वर! वेदना का निर्झर।

वह दूसरे चरण की ओर बढ़ रही थी—

समदरसी प्रभु नाम तिहारो, अब मोहि पार करो।

समदरसी प्रभु को वह उलट-पुलट कर दोहरा रही थी। मर्माहत स्वर। टीस गहरी। समूची आत्मा एक रस, एक लय!

इक लोहा पूजा में राखत, इक घर बधिक परो।

वाह! वाह! अद्‌भुत उद्धरण! विवेकानंद का चित्त डोल उठा। क्या पतिता में संन्यासी की मुक्ति छिपी है? क्या ऐसे अतीन्द्रिय स्वर की स्वामिनी कभी पतिता हो सकती है? उनसे भूल हुई।

वह गा रही थी—

पारस गुन औगुन नहिं चितवै, कंचन करज खरो॥

इसके साथ ही टेक भरती। अन्तर्लाप उठता। उसकी आँखें रस प्लावित हो उठतीं।

वह झूम उठी थी। साज-आवाज का अद्‌भुत संगम। वह धीरे से स्वर भर कर गा रही थी—

इक नदिया इक नार कहावत, मैलो नीर भरो।
जब दोऊ मिलि एक बरन भये, सुरसरि नाम परो॥

स्वामी की अन्तरात्मा मचल उठी—नहीं, वह गणिका नहीं है। उसके स्वर में नाद है—अनहद है! अद्‌भुत सृजन है। अन्तर्राग है। वह निष्पाप है। निश्छल है, निरूपम है। उनके पाँव चल पड़े। उनका हृदय राग भर उठा।

वह गा रही थी—

यह माया भ्रम जाल निबारो, सूरदास सगरो।
अब की बेर मोहि पार उतारो, नहिं प्रण जात टरो।

वह अन्तर्मन से गा रही थी। उसकी आँखों से अश्रु धारा प्रवाहित हो उठी थी।

विवेकानंद उसके सामने आ खड़े हुए थे। उनका अन्तर उपेक्षित सत्य का ध्यान कर आकुल-व्याकुल हो उठा था। 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म' को वह कैसे विस्मृत कर बैठे? सबके पीछे एक अभिन्न ब्रह्म सत्ता है। गणिका के पीछे फिर वह अभिन्न ब्रह्म सत्ता क्यों न होगी? उनमें भेदभाव कैसे उपजा? उनसे कौन-सा पाप हुआ? धन्य है, गणिका। धन्य है उसका गणिका धर्म। वह गणिका होकर भेदाभेद से ऊपर उठ सकी और वह...। अब वही गणिका उनका उद्धार करेगी। वह दो डग आगे बढ़े।

सारी सभा आश्चर्यचकित! स्वामीजी उस गणिका के सामने करबद्ध खड़े हुए थे। उनके बड़े-बड़े नेत्र सजल थे। उनके अरुणाभ अधर

विलुलित थे। नरेश आश्चर्य से भर कर मौन था।

अन्तत: विवेकानंद का सुमधुर कंठ गूँज उठा, ''माँ....।'' बहुत देर तक सारे वातावरण में वही माँ का स्वर अनुगूँजता रहा।

मालविका ने धीरे-धीरे आँखें खोलीं। उसके सामने दिव्य पुरुष खड़ा था हृदयांजलि लिए। उसकी डबडबायी आँखें व्याकुल हो उठीं। उसका हृदय कह उठा, ''हे अन्तर्यामी, अन्तर्दृष्टा स्वामी, दासी को लज्जित मत करो। उसका प्रणाम स्वीकारो।''

''माते, मुझसे अपराध हुआ है।''

''कदापि नहीं, स्वामीजी।''

''आपके प्रति मेरे मन में घृणा भाव जगा था और इसी कारण मैंने आपके कार्यक्रम में आने से इन्कार कर दिया था। मुंशीजी ने बहुत अनुनय विनय किया था परन्तु हृदय में जड़ता आ विराजी थी। माँ, मुझे इस अपराध के लिए क्षमा करो।'' विवेकानंद का कंठ अवरुद्ध होने लगा था।

मालविका हाथ जोड़कर खड़ी हो गयी और बोली, ''हे धर्मपुरुष अग जग को जानने वाले, आपके दर्शन का लाभ पा सकी, मेरा जीवन धन्य हो उठा।.... आपने नारी को गरिमा दी। मेरा मातृत्व लहक उठा।.... मुझे आशीर्वाद दीजिये।''

सारी सभा किंकर्त्तव्यविमूढ़ चित्रलिखित-सी।

नरेश ने गणिका को उपहार दिया। उसने स्वीकारा। उसी समय नवजात राजकुमार को लाया गया। स्वामीजी ने शिव मंत्रोच्चारण के साथ उसके माथे पर आशीर्वाद स्वरूप हाथ रखा।

गणिका ने आगे बढ़कर दिए गए उपहार को नवजात राजकुमार पर न्यौछावर कर गरीबों में बाँटने के लिए मुंशीजी की ओर बढ़ा दिया।

मुंशीजी ने नरेश की ओर देखा। नरेश ने सिर हिलाया। स्वामीजी उसे माँ कह चुके थे।

मालविका सबके हाथ जोड़ती हुई चल दी। उसके पीछे-पीछे उसके साथी चल पड़े। फिर स्वामीजी भी वहाँ नहीं रुके और अपने कक्ष की ओर बढ़ने लगे।

'**तरुण संन्यासी**' उपन्यास से

23 अप्रैल

विश्व पुस्तक दिवस

बच्चों, युवा, प्रौढ़
को
पुस्तकें भेंट कीजिए
जो
उन्हें प्रेरित करेंगी,
साहस
और
दिशा प्रदान करेंगी
अध्यात्म, चेतना जागृत करेंगी

*पुस्तकों का उपहार
अमूल्य होता है।*

संसदीय कार्यवाही से एक परिचय

संसद में जो कुछ होता है उससे पूरा देश प्रभावित होता है। सामाजिक जीवन का हर पहलू संसद की चर्चा के दायरे में आता है, अत: संसद की कार्यवाही पूरे राष्ट्र के लिए महत्वपूर्ण है। यह स्वाभाविक है कि हर जागरूक नागरिक संसद की कार्यवाही से अवगत रहना चाहता है। इसलिए संसदीय कार्य प्रणाली का सम्पर्क ज्ञान न केवल सांसदों और पत्रकारों बल्कि पढ़े-लिखे आम नागरिकों के लिए भी जरूरी है। ललितेश्वर प्रसाद श्रीवास्तव की पुस्तक संसद और संवाददाता इस दिशा में सराहनीय प्रयास है। नये पत्रकारों के लिए तो यह ज्ञानवर्द्धक है ही आम जन भी इसे पढ़कर संसदीय कार्यवाही को समझ पाने में समर्थ हो सकेंगे। बजट देश की अर्थ-व्यवस्था को नियंत्रित करता है। देश को कोई आर्थिक गतिविधि बजट के दायरे से बाहर नहीं है। बजट संसद से पारित होता है। इस पुस्तक के अध्याय बजट पर संसदीय नियंत्रण में बजट पारित होने की पूरी प्रक्रिया का विस्तार से उल्लेख है। संसदीय शब्दावली की भी सूची पुस्तक में दी गयी है जो संसदीय कार्यवाही को समझने में सहायक है। पुस्तक का एक महत्त्वपूर्ण अध्याय 'संसद में असंसदीय स्थिति' है। आये दिन हंगामों-शोरगुल से संसद की कार्यवाही स्थगित होने पर इस अध्याय में चिंता व्यक्त की गयी है। भारत की स्वतंत्रता की स्वर्ण जयंती पर लोकसभा के विशेष सत्र में 26 अगस्त, 1996 को तत्कालीन लोकसभाध्यक्ष पी०ए० संगमा ने जो भाषण किया था उसका अंश लेखक ने उद्धृत किया है। श्री संगमा ने अपने उक्त भाषण में सुझाव दिया था कि इस सभा के सदस्य बनने के इच्छुक व्यक्तियों के लिए चुनाव-पूर्व प्रशिक्षण आयोजित करने की जरूरत है। सचमुच संसद के सुचारु रूप से चलने के लिए ऐसा किया जाना जरूरी है ताकि सदन की मर्यादा भंग न हो। पुस्तक का 'पुरोवाक्' अनुभवी पत्रकार पटना के दैनिक 'आज' और 'प्रदीप' के पूर्व सम्पादक पारसनाथ सिंह का लिखा है। इसमें उन्होंने हिन्दी पत्रकारों को सावधान किया है कि हिन्दी को अनुवाद की भाषा न बनने दें। सचमुच हिन्दी की मूल प्रकृति को बनाये रखना हिन्दी पत्रकारों का दायित्व है। इस तथ्य को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता कि भाषा को बनाने-बिगाड़ने में पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका अहम है। इसलिए हिन्दी पत्रकारों को अंग्रेजी और हिन्दी दोनों की मूल प्रकृति को आत्मसात करना होगा ताकि कथ्य के प्रति अन्याय भी न हो और हिन्दी की मूल प्रकृति भी अक्षुण्ण रहे।

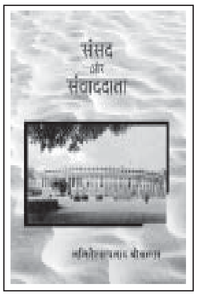

पुस्तक का नाम : **संसद और संवाददाता**
लेखक : ललितेश्वरप्रसाद श्रीवास्तव
मूल्य : 120 रुपये
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन
चौक, वाराणसी

हिन्दुस्तान

वाक्सिद्धि

प्रो० कल्याणमल लोढ़ा

एक सौ साठ रुपये

काल प्रवाह में इतिहास बोध नए क्षितिज उद्घाटित करता है। उसमें न कहीं अतीत है, न वर्तमान और न भविष्य। वह तो मानव-जीवन के विकास का नूतन और अव्याहत पक्ष है। साहित्य की संस्कृति समाज के साथ अविच्छिन्न और अपरिहार्य रूप से ग्रथित है। उसमें कहीं विश्लेष नहीं है। रचनाकार की मानसिकता कभी और कहीं भी सामाजिक मानसिकता से पृथक् और भिन्न नहीं होती। वैयक्तिक भावभूमि भी अपने मूल रूप में समाज से ही विन्यस्त है। आज साहित्य का मूल्यांकन इसी कारण समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, मिथकीय विधान और नृतत्त्व-विज्ञान से मानवीय मूल्यों पर आधृत है। कलात्मक सृजन भावभूमि की नई अर्थवत्ता के साथ-साथ सौन्दर्य चेतना की नई जीवनदृष्टि प्राप्त करता है। समाज के संप्रेक्ष्य में काव्य जीवन की अन्त:यात्रा है। इसी से कवि-कर्म एक ओर संवेदनात्मक है, तो दूसरी ओर चिन्तनपरक भी। वह अकथित का कथन करता है और उसका चिन्तक पृच्छापथ का यात्री है। प्रौढ़ रचना प्रक्रिया में दोनों अभेद हो जाते हैं। यही वाक्पथ है एवं उसकी सार्थकता भी। वाक्पथ का यह संधान ही रचना का मूल तत्त्व है, और कवि की मानसिक उन्मुक्तता—बंधनहीन; जहाँ वह परम्परा से जुड़कर भी उससे दूर रह जाता है। कला चाक्षुष नहीं, मानसिक सृष्टि होती है।

अतीत के धरातल पर ही वर्तमान फलता फूलता है और भविष्य की ओर अभिमुख होता है। साहित्य के इतिहास में अतीत जड़ और अविस्मरणीय नहीं रहता। वह तो एक गवाक्ष है, जिससे वर्तमान का क्षितिज स्पष्ट दिखाई देता है। वाक्सिद्धि में ऐसे ही साधकों को रेखांकित करने का प्रयास किया गया है। वाक् की सिद्धि उन तप:पूत साधकों से ही होती है, जिनकी रचनाएँ वाग्विभव को प्रशस्त करके समाज की नई चेतना को प्रमाणित करती हैं। यदि ये निबन्ध गवाक्ष नहीं भी हों तो चक्षुछिद्र (आइलेट) तो होंगे ही।

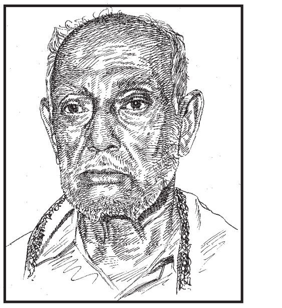

म०प०पं० गोपीनाथ कविराज के
अध्यात्मपरक ग्रन्थ

क्रम-साधना		80
अखण्ड महायोग		50
श्रीकृष्ण प्रसंग	सजिल्द	250
	अजिल्द	150
योगिराज विशुद्धानन्द प्रसंग तथा तत्व कथा	सजिल्द	250
	अजिल्द	130
शक्ति का जागरण और कुण्डलिनी		100
श्री साधना		50
दीक्षा	सजिल्द	60
	अजिल्द	40
सनातन साधना की गुप्त धारा	सजिल्द	100
	अजिल्द	80
साधु दर्शन एवं सत्प्रसंग, भाग 1, 2	सजिल्द	80
	अजिल्द	60
साधु दर्शन एवं सत्प्रसंग, भाग 3		50
मनीषी की लोकयात्रा (म०म०पं० कविराज का जीवन दर्शन)	सजिल्द	300
	अजिल्द	200
कविराज प्रतिभा		64
ज्ञानगंज		60
अज्ञान तथा क्रमपथ		80
तन्त्राचार्य गोपीनाथ कविराज और योगतन्त्र साधना	*रमेशचन्द्र अवस्थी*	50
परातन्त्र साधना पथ	*रमेशचन्द्र अवस्थी*	40
भारतीय संस्कृति और साधना	(प्रथम खण्ड)	200
	(द्वितीय खण्ड)	120
तांत्रिक वांगमय में शक्ति दृष्टि		100
तांत्रिक साधना और सिद्धान्त		120
तंत्र और आगम शास्त्रों का दिग्दर्शन		15
भारतीय साधना की धारा		30
अखण्ड महायोग का पथ और मृत्यु विज्ञान		20
स्वसंवेदन		50
काशी की सारस्वत साधना		35

भारतीय साहित्य में सबसे पहले ऋग्वेद में 'धर्म' शब्द मिलता है। धर्म ही वह मानदंड है जो विश्व को धारण करता है। प्रत्येक पदार्थ का व्यक्तित्व जिस वृत्ति पर निर्भर है, वही उस पदार्थ का धर्म है। धर्म की कमी से उस पदार्थ का क्षय होता है और धर्म की वृद्धि से उस पदार्थ की वृद्धि होती है। जैसे कि केले के फूल का एक धर्म सुवास है, उसकी वृद्धि उसकी कली का विकास है। उसकी कमी से फूल का ह्रास है।

—डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल

अध्यात्मपरक अन्य ग्रन्थ

करुणामूर्ति बुद्ध	*डॉ० गुणवन्त शाह*	25
महामानव महावीर	*डॉ० गुणवन्त शाह*	30
मारण पात्र (योगी, साधकों तथा तांत्रिकों के चमत्कार)	*अरुणकुमार शर्मा*	250
नीब करौरी के बाबा	*डॉ० बदरीनाथ कपूर*	12
उत्तराखण्ड की सन्त परम्परा	*डॉ० गिरिराज शाह* सजिल्द 100, अजिल्द	80
सोमबारी महाराज (उत्तराखण्ड की अनन्य विभूति)	*हरिश्चन्द्र मिश्र* सजिल्द 50, अजिल्द	40
सन्त रैदास	*श्रीमती पद्मावती झुनझुनवाला*	60
सूर्य विज्ञान प्रणेता योगिराजाधिराज परमहंसदेव : जीवन और दर्शन	*नन्दलाल गुप्त*	140
पुराण पुरुष योगिराज श्री श्यामा चरण लाहिड़ी (हिन्दी)	*सत्यचरण लाहिड़ी*	120
पुराण पुरुष योगिराज श्री श्यामा चरण लाहिड़ी (अंग्रेजी)	*डॉ० अशोककुमार चटर्जी*	400
योग एवं एक गृहस्थ योगी : योगिराज सत्यचरण लाहिड़ी (पौत्र : महायोगी लाहिड़ी महाशय)	*शिवनारायण लाल*	150
योगिराज तैलंग स्वामी	*विश्वनाथ मुखर्जी*	40
भारत के महान योगी : 5 खण्डों में (सेट)	*विश्वनाथ मुखर्जी*	500
भारत की महान साधिकाएँ	*विश्वनाथ मुखर्जी* सजिल्द 40, अजिल्द	30
महाराष्ट्र के संत-महात्मा	*ना०वि० सप्रे* सजिल्द 200, अजिल्द	120
शिवनारायणी सम्प्रदाय और उसका साहित्य	*डॉ० रामचन्द्र तिवारी*	100
महात्मा बनादास : जीवन और साहित्य	*डॉ० भगवतीप्रसाद सिंह*	60
पूर्वांचल के संत महात्मा	*परागकुमार मोदी*	80
उत्तिष्ठ कौन्तेय	*डॉ० डेविड फ्राली* सजिल्द	250
	अनु०- *केशवप्रसाद कांया* अजिल्द	150
सब कुछ और कुछ नहीं	*मेहेर बाबा*	60
वाग्विभव	*प्रो० कल्याणमल लोढ़ा*	200
वाग्दोह	*प्रो० कल्याणमल लोढ़ा*	200
गुप्त भारत की खोज	*पाल ब्रंटन*	200
वह रहस्यमय कापालिक मठ	*अरुणकुमार शर्मा*	180
तिब्बत की वह रहस्यमयी घाटी	*अरुणकुमार शर्मा*	180
मृतात्माओं से सम्पर्क	*अरुणकुमार शर्मा*	200
जपसूत्रम (द्वितीय खण्ड)	*स्वामी श्री प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती*	150
सोमतत्व	*सं० - प्रो० कल्याणमल लोढ़ा*	100
वेद व विज्ञान	*स्वामी श्री प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती*	180
श्रीकृष्ण : कर्म दर्शन (अद्भुत लीला प्रसंग)	*शारदाप्रसाद सिंह*	40
रावण की सत्यकथा	*रामनगीना सिंह*	60
कृष्ण और मानव सम्बन्ध (गीता)	*हरीन्द्र दवे* सजिल्द 80, अजिल्द	50
हिन्दी ज्ञानेश्वरी	*अनु०-ना०वि० सप्रे* सजिल्द	250
	अजिल्द	180
कृष्ण का जीवन संगीत (गीता)	*डॉ० गुणवन्त शाह*	300
श्रीमद्भगवद्गीता (3 खण्डो में)	*श्री श्यामाचरण लाहिड़ी*	350
संत कबीर और भगताही पंथ	*डॉ० शुकदेव सिंह* सजिल्द 130, अजिल्द	100
कथा राम कै गूढ़ (तुलसी)	*डॉ० रामचन्द्र तिवारी*	125
संतो राह दुओ हम दीठा (कबीर)	*सं०-डॉ० भगवानदेव पाण्डेय*	150
नीब करौरी बाबा के मधुर दिव्य प्रसंग	*रामदास : गिरिराज शाह*	यंत्रस्थ
प्राणमयं जगत	*अशोककुमार चट्टोपाध्याय*	22
श्यामाचरण क्रियायोग व अद्वैतवाद	*अशोककुमार चट्टोपाध्याय*	100
रामायण मीमांसा	*करपात्रीजी महाराज*	यंत्रस्थ
भक्ति-सुधा	*करपात्रीजी महाराज*	190
श्री भागवत-सुधा	*करपात्रीजी महाराज*	50
श्री राधा-सुधा	*करपात्रीजी महाराज*	50
भ्रमर-गीत	*करपात्रीजी महाराज*	90
गोपी-गीत	*करपात्रीजी महाराज*	120
श्री विद्या-रत्नाकर	*करपात्रीजी महाराज*	140
श्री विद्या-वरिवस्या	*करपात्रीजी महाराज*	70
श्री भुवनेश्वरी वरिवस्या	*श्री दत्तात्रेयानन्दनाथ*	50
श्री महागणपति वरिवस्या	*श्री दत्तात्रेयानन्दनाथ*	60
परातन्त्र साधना पथ (गोपीनाथ कविराज)	*रमेशचन्द्र अवस्थी*	40
शिवस्वरूप बाबा हैड़ाखान	*सद्गुरूप्रसाद श्रीवास्तव*	150
तरुण संन्यासी (स्वामी विवेकानंद)	*डॉ० राजेन्द्रमोहन भटनागर*	120
भारतीय मनीषा के अग्रदूत : पं० मदनमोहन मालवीय	*डॉ० चन्द्रकला पाडिया*	150
वाग्विभव	*प्रो० कल्याणमल लोढ़ा*	200

आज मैं यह देख सकता हूँ कि भागवत एक ऐसा ग्रन्थ है, जिसके पाठ से धर्म-रस उत्पन्न किया जा सकता है। मैंने तो उसे गुजराती में बड़े चाव से पढ़ा है। लेकिन इक्कीस दिन के अपने उपवास-काल में भारत-भूषण पंडित मदनमोहन मालवीयजी के शुभ मुख से मूल संस्कृत के कुछ अंश सुने, तो खयाल हुआ कि बचपन में उनके सम्मान भगवद्-भक्त के मुँह से भागवत सुनी होती तो उस पर उसी उम्र में मेरा गाढ़ा प्रेम हो जाता। बचपन में पड़े हुए शुभ-अशुभ संस्कार बहुत गहरी जड़े जमाते हैं, इसे मैं खूब अनुभव करता हूँ और इस कारण उस उम्र में मुझे कई उत्तम ग्रंथ सुनने का लाभ नहीं मिला, सो अब अखरता है।

—महात्मा गाँधी

कबीर और भारतीय संत साहित्य

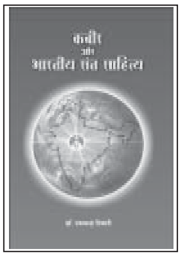

डॉ० रामचन्द्र तिवारी

एक सौ अस्सी रुपये

कबीर मध्यकालीन भक्ति-आन्दोलन के केन्द्र बिन्दु हैं। उनका व्यक्तित्व अद्वितीय है। इस आन्दोलन की प्रत्येक हिलोर उनसे टकराती है। वे सभी से भींगते हैं। किन्तु कमल-पत्र की तरह सभी हिलोरों के ऊपर दिखाई देते हैं। वे योगी भी हैं, भक्त भी। सूफी भी हैं, संत भी। निर्गुण भी, सगुण भी और निर्गुण-सगुण से परे भी। वे हिन्दुओं के भी हैं, मुसलमानों के भी; किन्तु न हिन्दू हैं, न मुसलमान। वे अतीत भी हैं, वर्तमान भी। वे पन्द्रहवीं शती के हैं, बीसवीं के भी। देशकाल-बुद्ध भी हैं, मुक्त भी। जीवित भी हैं, मृतक भी। वे गृही भी हैं और त्यागी भी।

ऐसे विलक्षण व्यक्तित्व के विषय में कुछ कहना, उसे समझने का प्रयत्न करना और उसके महत्त्व का उद्घाटन करना आसान नहीं है। आसान इसलिए भी नहीं है कि हमारा कद उनसे बहुत छोटा है। कहने को हम विज्ञान के युग में जी रहे हैं। संसार का सारा रहस्य हमारी मुट्ठी में है। लेकिन सच्चाई यह है कि हम क्रमश: मनुष्यता से दूर होते जा रहे हैं। संसार की भौतिक सीमायें सिमटती जा रही हैं किन्तु मानसिक दूरियाँ बढ़ती जा रही हैं। मन के स्तर पर हम अनेक तरह के भेद-प्रभेदों में सिमटकर छोटे होते गए हैं। कबीर से हमारी दूरियाँ बढ़ती गई हैं। गनीमत है कि हमारी संवेदना अभी कहीं न कहीं जीवित है। इसलिए हमें कबीर की चिन्ता है और हम उन्हें समझने की कोशिश कर रहे हैं। विश्वास कर रहे हैं कि उनका होना आज हमारे लिए बेहद जरूरी है। प्रस्तुत कृति कबीर को समझने के प्रयत्न में लिखी गई है।

कृष्णा सोबती को शलाका सम्मान

हिन्दी की सुप्रसिद्ध लेखिका **कृष्णा सोबती** को वर्ष 2000-2001 के लिए हिन्दी अकादमी के सर्वोच्च प्रतिष्ठित शलाका सम्मान के लिए चुना गया है। सुश्री सोबती को सम्मान में एक लाख 11 हजार एक सौ रुपए नकद, शाल तथा प्रशस्ति पत्र प्रदान किए जायेंगे।

इनके अतिरिक्त ग्यारह लेखकों को साहित्यकार सम्मान प्रदान किया जायेगा। इनमें प्रो० निर्मला जैन, सत्येन्द्र शरत, मैनेजर पाण्डेय, धर्मेन्द्र गुप्त, प्रेम कपूर, महेन्द्र भल्ला, सोहनपाल सुमनाक्षर, कमल कुमार, रमेश दत्त शर्मा, वीरेन्द्र सांधी तथा रवीन्द्र त्रिपाठी शामिल हैं। इन लेखकों को 21-21 हजार रुपये नकद, शाल तथा प्रशस्ति पत्र प्रदान किये जायेंगे। उन्होंने बताया कि हास्य तथा व्यंग्य कविता के लिए काका हाथरसी सम्मान डॉ० सरोजनी प्रीतम को दिया जायेगा। सम्मान में 21 हजार रुपये नकद शाल एवं प्रशस्ति पत्र शामिल है।

बामियाँ भारत का देहलीद्वार

बामियाँ में पहाड़ी को काटकर दो बावनगजा बुद्ध मूर्तियाँ बनाई गई थीं जिनमें से एक 114 फुट (35 मीटर), और दूसरी लगभग 173 फुट (53 मीटर) ऊँची है। इनके पृष्ठ भाग में और दोनों ओर अनेक गुफाएँ हैं जिनमें अजन्ता जैसे भित्ति चित्र बने हुए हैं। इन चित्रों पर सासानी ईरान और मध्य एशिया की चित्रकला का प्रभाव है।

बामियाँ की पर्वत घाटी उस युग में भारत का देहलीद्वार था। चीन, मध्य एशिया, ईरान और रोम से आने वाले धर्म यात्रियों को भारत के दिव्य स्वरूप का दर्शन कराने के लिए इन विशाल बावनगजा बुद्ध मूर्तियों और भव्य गुफा चित्रों का निर्माण वस्तुत: यहाँ किया गया था।

—वासुदेवशरण अग्रवाल

हिन्दी के प्रमुख उपन्यासकार **गिरिराज किशोर** को गाँधीजी के दक्षिण अफ्रीका प्रवास तक के जीवन पर आधारित 'पहला गिरमिटिया' उपन्यास पर उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री विष्णुकान्त शास्त्री ने के०के० बिड़ला फाउण्डेशन द्वारा प्रायोजित वर्ष 2000 का व्यास सम्मान प्रदान किया।

जिसके तहत ढाई लाख रुपये की राशि और प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 2 **अप्रैल 2001** **अंक : 4**

प्रधान सम्पादक
पुरुषोत्तमदास मोदी

सम्पादक
परागकुमार मोदी

वार्षिक शुल्क
रु० 30.00

विश्वविद्यालय प्रकाशन
वाराणसी
के लिए
अनुरागकुमार मोदी
द्वारा प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०
वाराणसी
द्वारा मुद्रित

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत

रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2001

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन
प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता
(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)
विशालाक्षी भवन, पो०बाक्स 1149
चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN
Premier Publisher & Bookseller
(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIAN)
Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149
Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)

☎ : (0542) 353741, 353082 ● **Fax** : (0542) 353082 ● **E-mail** : vvp@vsnl.com ● vvp@ndb.vsnl.net.in